

क. सच्चा तम्बू।

- ❖ बाइबल का अध्ययन करने पर, 1844 की निराशा के बाद एडवेंटिस्ट लोगों ने पाया कि दो पवित्रस्थान थे: (1) एक सांसारिक पवित्रस्थान, सच्चे का एक प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब (इब्रानियों 8:5) (2) एक स्वर्गीय पवित्रस्थान, जिसे स्वयं परमेश्वर ने बनाया है (इब्रानियों 8:2)
- ❖ पहला पवित्रस्थान, और उसके बाद 70 ईसवी तक बने मंदिर, उस नमूने के अनुसार बनाए गए थे जो परमेश्वर ने मूसा को दिखाया था (निर्गमन 25:40)। उनमें यीशु, सच्चे मेमने और महायाजक, का प्रतिनिधित्व किया गया था (यूहन्ना 1:36; इब्रानियों 4:14)।

ख. पवित्रस्थान को शुद्ध करना।

- ❖ हालाँकि इस्राएलियों को उनके बलिदान चढ़ाने से क्षमा कर दिया गया था, लेकिन उनका अपराध पवित्रस्थान में "स्थानांतरित" कर दिया गया था। अतः इसका शुद्ध करना आवश्यक था। यह प्रायश्चित के दिन हुआ, जिसे आज भी इब्रानियों के बीच न्याय के दिन के रूप में जाना जाता है।
- ❖ यदि किसी ने उस दिन शोक नहीं मनाया, अपने पापों का पश्चाताप नहीं किया, तो उन्हें अपने लोगों में से "नष्ट किया गया" (लैव्यव्यवस्था 23:29-30)। उस दिन उनका भाग्य मोहरबंद हो गया। उसी तरह, जब स्वर्गीय पवित्रस्थान का शुद्ध करना पूरा हो जाएगा, तो हमारा भी भाग्य मोहरबंद हो जाएगा। इस बीच, आज हमारी आत्माओं के क्लेश का दिन है, निर्णय का दिन है (इब्रानियों 3:14-15)।

ग. न्याय।

- ❖ भविष्यवाणी के अनुसार, स्वर्गीय पवित्रस्थान का शुद्ध करना - यानी, न्याय - 1844 में शुरू हुआ। तब से, एडवेंटिस्ट कलीसिया ने जोर-शोर से घोषणा की है कि न्याय का समय आ गया है, और सभी को परमेश्वर की आराधना करने और उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीने के लिए आमंत्रित किया है।
- ❖ लेकिन क्या यीशु के पृथ्वी पर आने पर न्याय नहीं होगा (1 इतिहास 16:33; 2 तीमुथियुस 4:1)?
- ❖ जब यीशु आयेगा, तो वह पहले से ही किए गए न्याय को क्रियान्वित करेगा, क्योंकि वह "हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल" लेकर आयेगा (प्रकाशितवाक्य 22:12); वह चुने हुए लोगों को इकट्ठा करने के लिए अपने स्वर्गादूतों को भेजता है (मत्ती 24:31); और उन लोगों को पुनर्जीवित करता है जिन्होंने उस पर विश्वास किया (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। ध्यान दें कि यीशु के आने पर मृत अविश्वासियों को पुनर्जीवित नहीं किया जाता है और इसलिए उस समय उनका न्याय नहीं किया जाता है (प्रकाशितवाक्य 20:4-5)।

घ. दया और न्याय।

- ❖ सन्दूक में रखी गई 10 आज्ञाएँ न्याय के मानक, ईश्वरीय न्याय का प्रतिनिधित्व करती हैं (सभोपदेशक 12:13-14)। व्यवस्था और परमेश्वर की उपस्थिति के बीच रखा गया दया का आसन दिव्य दया का प्रतिनिधित्व करता है (1 यूहन्ना 2:1-2)।
- ❖ स्वर्गीय पवित्रस्थान का मार्ग यीशु के बलिदान को स्वीकार करने से शुरू होता है (उसका लहू होमबलि की वेदी पर छिड़का गया)
- ❖ मसीह के साथ एकता में जीवन जारी रखता है (धूप की वेदी पर छिड़का गया उसका रक्त)
- ❖ समाप्त हो गया हमारा मुकदमा जो न्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है (उसका खून जब सन्दूक के सामने पर्दे पर छिड़का गया)
- ❖ न्याय के लिए व्यवस्था का अनुपालन आवश्यक है। दया हमारे स्थान पर यीशु के परिपूर्ण जीवन को स्वीकार करती है (1 पतरस 1:18-19)। "इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो" (1 यूहन्ना 4:17)।

ङ. सहायक और मध्यस्थ।

- ❖ हमारे पूरे जीवन में और निस्संदेह, न्याय के समय, यीशु हमारा सहायक है (1 यूहन्ना 2:1)।
- ❖ स्वर्गीय पवित्रस्थान में यीशु का कार्य हमें सिखाता है:
 - छुटकारे की योजना की स्पष्ट समझ
 - परमेश्वर की व्यवस्था की मांगें
 - हमारे उद्धार की अनंत कीमत
 - वह रास्ता जो यीशु ने पिता तक पहुँचने के लिए खोला
 - आत्मविश्वास के साथ परमेश्वर के पास जाने में सक्षम होने की सुरक्षा
- ❖ जल्द ही, न्याय समाप्त हो जाएगा और यीशु "दूसरी बार प्रकट होगा, पाप उठाने के लिए नहीं, बल्कि उन लोगों का उद्धार करने के लिए जो उसकी बाट जोह रहे हैं" (इब्रानियों 9:28)